मास्टर ऑव सोशल वर्क
एम० एस० डब्लू -17

सामाजिक मनोविज्ञान, संचार एवं समाज कार्य
(एम० एस० डब्लू -5)
इकाई -3
व्यक्तित्व एवं मानव व्यवहार

डॉ० नीरजा सिंह
कार्यक्रम समन्वयक समाज कार्य
उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ,हल्द्वानी ,नैनीताल
उत्तराखंड

व्यक्तित्व एवं मानव व्यवहार विषयक इस इकाई को निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया गया है संसार का हर एक व्यक्ति एक दूसरे से भिन्न होता है। व्यक्तित्व में आपकी षारीरिक एवं संवेगात्मक; अभिवृत्तियां तथा प्रतिक्रियायें निहित होती है। व्यक्तित्व हर एक व्यक्ति का एक बिल्कुल ही अलग चिन्तन करने, व्यवहार करने एव अनुभव करने का तरीका होता है।

व्यक्तित्व से तात्पर्य उन विशिष्ट तरीकों से है जिनके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों और स्थतियों के प्रति अनुक्रिया करता है। हर एक व्यक्ति बड़ी सरलता से इस बात का वर्णन कर सकते हैं कि वे किस तरीके से विभिन्न परिस्थितियों के प्रति अनुक्रिया करते हैं; जैसे - खुशमिजाज, शांत, गंभीर इत्यादि शब्दों के द्वारा प्रायः व्यक्तित्व का वर्णन किया जाता है।

व्यक्तित्व का शाब्दिक अर्थ लैटिन शब्द परसोना से लिया गया है। परसोना उस मुखौटे को कहते हैं जिसे अपनी मुख-रूपसज्जा को बदलने के लिए रोमन नाटकों में अभिनेता उपयोग में लाते थे। अभिनेता जिस मुखौटे को अपनाता है, दर्शक उससे उसी अनुरूप भूमिका की प्रत्याशा रखते हैं।

व्यक्तित्व के उपागम

प्रारूप उपागम

इस उपागम में व्यक्तित्व के प्रारूप ;ज्लचमद्ध समानताओं के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण किया जाता है। ग्रीक चिकित्सक हिप्पोक्रेट्स लोगों को उनके शरीर मे उपस्थित फ्लुइड के आधार पर चार प्ररूपों में वर्गीकृत किया है- उत्साही (पीला पित्त), श्लैष्मिक (कफ), विवादी (रक्त) तथा कोपशील (काला पित्त)। इन द्रवों की प्रधानता के आधार पर प्रत्येक प्ररूप विशिष्ट व्यवहारपरक विशेषताओं वाला होता है।

शीलगुण उपागम

शीलगुण उपागम में व्यक्तित्व की व्याख्या व्यक्ति के शीलगुणों के आधार पर की जाती है। शीलगुण उपागम व्यक्तित्व का निर्माण करने वाले मूल तत्वों की खोज करते हैं। लोगों में मनोवैज्ञानिक गुणों में भिन्नता पायी जाती है। इन्हीं भिन्नताओं को आधार मानकर ऑलपोर्ट और कैटेल ने अपने-अपने सिद्धान्त प्रस्तुत किये। ऑलपोर्ट ने शीलगुणों को तीन वर्गों में वर्गीकृत किया- प्रमुख शीलगुण, केंद्रीय शीलगुण तथा गौण शीलगुण । प्रमुख शीलगुण सामान्य प्रवृत्तियाँ होती हैं। ये प्रवृत्तियाँ उस लक्ष्य को दर्शाती हैं, जिसके इर्दगिर्द ही व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन व्यतीत होता है। जैसे- मदर टेरेसा का सेवाभाव और हिटलर का नाजीवाद इत्यादि। कम व्यापक किंतु फिर भी सामान्य प्रवृत्तियाँ केंद्रीय गुण मानी जाती हैं। जैसे- इमानदार, मेहनती आदि। व्यक्ति के सबसे कम सामान्य गुणों के रूप में गौण शीलगुण जाने जाते हैं। जैसे-'मैं सेब पसंद करता हूँ' अथवा 'मैं अकेले घूमना पसंद करता हूँ इत्यादि ।

मनोविश्लेषणात्मक उपागम

इस उपागम का प्रतिपादन सिगमण्ड फ्रायड दवारा किया गया था। फ्रायड एक चिकित्सक थे और उन्होंने अपना सिद्धांत अपने पेशे के दौरान ही विकसित किया। उन्होंने मानव मन को चेतना के तीन स्तरों (चेतन, पूर्वचेतन और अचेतन) के रूप में विभक्त किया है। प्रथम स्तर चेतन होता है जिसमें वे चिंतन, भावनाएँ और क्रियाएँ आती हैं जिनकी जानकरी लोगों को रहती है। दवितीय स्तर पूर्वचेतना होता है जिसमें वे मानसिक क्रियाएँ आती हैं जिनकी जानकारी लोगों को तभी होती है जब वे उन पर ध्यान केंद्रित करते हैं। चेतना का तृतीय स्तर अचेतन होता है जिसमें ऐसी मानसिक क्रियाएँ आती हैं जिनकी जानकारी लोगों को नहीं होती है।

फ्रायड ने व्यक्तित्व की संरचना के तीन तत्व बताये हैं- इदम् या इड ,अहं और पराहम। इदम असमन्वित सहज प्रकृति है, जो सुख के सिद्धान्त पर आधारित होता है। अहं सुनियोजित होता है, जो वास्तविकता के सिद्धान्त पर आधारित होता है और पराहम पूर्णता को प्रदर्शित करता है, नैतिकता पर आधारित होता है।

फ्रायड ने रक्षा युक्तियों के बारे में विस्तार से बताया है। रक्षा युक्तियाँ वास्तविकता को विकृत कर दुश्चिंता को कम करने का माध्यम है। रक्षा युक्तियों में सबसे महत्वपूर्ण दमन है जिसमें दुश्चिंता उत्पन्न करने वाले व्यवहारों और विचारों को पूरी तरह चेतना के स्तर से विलुप्त कर देते हैं। दमन करते समय उन्हें इसका ज्ञान भी नहीं रहता है। कुछ और युक्तियाँ रक्षा प्रक्षेपण, प्रतिक्रिया निर्माण और युक्तिकरण, इत्यादि हैं।

नव-फ्रायडवादी उपागम

नव-फ्रायडवादीयों में युंग, होर्नी , एडलर, एरिक्सन आदि का नाम महत्वपूर्ण है। सबसे पहला नाम युंग का आता है। पहले युंग ने फ्रायड के साथ ही काम किया किंतु बाद में वे फ्रायड से अलग हो गए। युंग के अनुसार मनुष्य काम-भावना और आक्रामकता स्थान पर उद्देश्यों और आकांक्षाओं से अधिक निर्देशित होते है। उन्होंने व्यक्तित्व का अपना एक सिद्धांत प्रतिपादित किया जिसे विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान कहते हैं।

फ्रायड के अनुयायियों में युंग के बाद दूसरा नाम होर्नी का आता है। ये आशावादी दृष्टिकोण को मानने वाले थे। उनके अनुसार माता-पिता बच्चे के प्रति यदि उदासीनता, हतोत्साहित करने और अनियमिता का व्यवहार करते हैं तो बच्चे के मन में एक असुरक्षा की भावना विकसित होती है जिसे मूल दुश्चिंता कहते हैं। एकाकीपन और असुरक्षा की भावना के कारण बच्चों के स्वास्थ्य के विकास में बाधा होती है।

एडलर ने वैयक्तिक मनोविज्ञान का सिद्धान्त प्रस्तुत किया। इसके अनुसार व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण एवं लक्ष्योन्मुख व्यवहार करता है। एडलर के अनुसार हर एक व्यक्ति हीनता से ग्रसित होता है। एक अच्छे व्यक्तित्व के विकास के लिए इस हीनता की भावना का समाप्त होना अति आवश्यक है। एरिक्सन ;म्तपोवदद्ध ने व्यक्तित्व-विकास में तर्कयुक्त चिन्तन एवं सचेतन अहं पर बल दिया है। उनके अनुसार विकास एक जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है और अहं अनन्यता का इस प्रक्रिया में केन्द्रीय स्थान है।

व्यवहारवादी उपागम

यह उपागम उद्दीपक-अनुक्रिया के आपसी तालमेल के आधार पर अधिगम और प्रबलन को महत्व देता है। व्यवहारवादियों के अनुसार पर्यावरण के प्रति व्यक्ति की अनुक्रिया के आधार पर उसके व्यक्तित्व को अच्छी तरह से समझा जा सकता है। व्यवहारवार के प्रमुख सिद्धांतो में पावलव द्वारा दिया गया प्राचीन अनुबंधन, स्किनर द्वारा दिया गया नैमित्तिक अनुबंधन और बंडुरा द्वारा दिया गया सामाजिक अधिगम सिद्धांत मुख्य हैं। व्यवहारवार के इन प्रमुख सिद्धांतों का व्यक्तित्व विकास के विश्लेषण में बहुतायत से प्रयोग हुआ है। प्राचीन एवं नैमित्तिक अनुबंधन सिद्धांतों में संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं का कोई स्थान नहीं है, जबकि सामाजिक अधिगम सिद्धांत में संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को प्रमुख स्थान दिया गया है।

मानवतावादी उपागम

मानवतावादी उपागम में रोजर्स ;त्वहमतेद्ध और मैस्लो ;ड्ंेसवद्ध के सिद्धांत प्रमुख हैं। रोजर्स ने आत्म ;ैमसद्धि पर अधिक बल दिया है। जिसमें उन्होंने वास्तविक आत्म ;तमंस ेमसद्धि और आदर्श आत्म ;पकमंस ेमसद्धि की चर्चा की है। प्रत्येक व्यक्ति का एक आदर्श आत्म होता है जिसको प्राप्त करने के लिए वह हमेशा तत्पर रहता है। आदर्श आत्म वह आत्म होता है जो कि एक व्यक्ति बनाना चाहता है। जब वास्तविक आत्म और आदर्श आत्म समान होते हंै तो व्यक्ति प्रसन्न रहता है और दोनों प्रकार के आत्म के बीच विसंगति के कारण प्रायः अप्रसन्नता और असंतोष की भावनाएँ उत्पन्न होती हैं। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में अपनी अन्तःशक्तियों को पहचानने और उसी के अनुरूप व्यवहार करने की विशेष क्षमता होती है। व्यक्तित्व विकास के लिए संतुष्टि एक अभिप्ररक शक्ति का कार्य करती है। लोग अपनी क्षमताओं और प्रतिभाओं को उत्कृष्ट तरीके से अभिव्यक्त करने का प्रयास करते हैं।

जैविक कारक

जैविक कारक वस्तुतः वे कारक होते हैं जो व्यक्ति में आनुवंशिक या जन्मजात होते हैं। ऐसे प्रमुख कारकों में प्रथम कारक व्यक्ति की शारीरिक संरचना एवं स्वास्थ्य है। प्रायः देखा गया है कि शारीरिक संरचना से संबंधित सभी शीलगुण वंशानुगत होते हैं। जिन बच्चों के माता-पिता लंबे कद के होते हैं उनका कद भी लंबा होता है, और जिन बच्चों के माता-पिता नाटे कद के होते हैं उनका कद भी नाटा होता है। माता पिता के सांवले और गोरे होने पर, उनके बच्चे भी सांवले और गोरे होते हैं। व्यक्ति के इन शारीरिक शीलगुणों तथा स्वास्थ्य का प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर भी पड़ता है। जो लोग शारीरिक रूप से स्वस्थ और सुंदर होते है उनमें आत्मविश्वास, सामाजिकता और उत्तरदायित्व का विकास होता है। इसके विपरीत जिन लोगों में इन शीलगुणों की कमी होती है; उनके हीन-भावना से ग्रस्त होने की संभावना बढ जाती है।

वातावरणीय कारक

व्यक्तित्व विकास सिर्फ जैविक कारकों से ही नहीं प्रभावित होता है, बल्कि वातावरण से संबंधित कारक भी व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करते हैं। वातावरणीय कारको को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है-सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारक। व्यक्ति एक सामाजिक वातावरण मे निवास करता है। सामाजिक कारकों में माता-पिता, संगी-साथी इत्याड़ि प्रमुख हैं। मनोवैज्ञानिकों का मानना है जरूरत से अधिक लाड़-प्यार देने पर बच्चे मे असुरक्षा की भावना का विकास हो जाता है वहीं समय की कमी के कारण उचित प्यार भी अपने बच्चों को नहीं दे पाते हैं। अधिक सख्ती से पेश आने पर बच्चे में अधीनस्थता का गुण विकसित हो जाता है, उचित प्यार न मिल पाने के कारण बच्चे सांवेगिक रूप से अस्थिर हो जाते हैं। परिवार के सदस्यों का आपसी संबंध अच्छा होने पर बच्चे भी अपने बड़ों की भांति स्वय को ढाल लेते हैं। जिसके फलस्वरूप उनमें आत्मविश्सास, विश्वसनीयता और श्रेष्ठता की भावना विकसित हो जाती है। दूसरी तरफ वे परिवार जो झगड़ालू होते हैं उनमें पलने वाले बच्चों मे हीन भावना, सांवेगिक अस्थिरता और अन्तर्मुखता के गुण पाये जाते हैं। जन्मक्रम का भी व्यक्तित्व के विकास पर प्ररभाव पड़ता है।

व्यक्तित्व का मापन

हम अक्सर ही नित नए लोगों से मिलते रहते हैं और उनको समझने का प्रयास भी करते हैं। इसके साथ-साथ ही उनसे अंतःक्रिया करने के पहले ही हम ये भविष्य कथन भी करते हैं कि वे क्या कर सकते हैं। हम अपने व्यक्तिगत जीवन में अपने पर्वानुभवों, प्रेक्षणों, वार्तालापों और दूसरे लोगों से प्राप्त सचनाओं पर विश्वास करते हैं। मनोविज्ञान में भी इसके लिए कुछ विधियां बतायी गयी हैं।

सामान्यतः सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली तकनीकों में मनोमितिक परीक्षण आत्म-प्रतिवेदन माप प्रक्षेपी तकनीके और व्यवहारपरक विश्लेषण आते हैं।

आत्म प्रतिवेदन के दवारा विभन्न पर्वनिर्मित मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के माध्यम से किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे जानकरी प्राप्त की जाती है। जिससे किसी के भी व्यक्तित्व का आकलन किया जा सकता है। जैसे- मिनेसोटा मल्टीफेजिक पर्सनालिटी इन्वेट्री (एम0एम0पी0आई0)

प्रयोगात्मक स्थितियों में भी लोग प्रायः आत्मचेतन का अनुभव करते हैं और अपनी निजी या अंतरंग भावनाओं, विचारों और अभिप्रेरणाओं को व्यक्त करने में हिचकिचाते हैं। ऐसा जब भी करते हैं वे प्रायः सामाजिक दृष्टि से वांछनीय तरीके के अनुरूप व्यवहार करने का प्रयास करते हैं। इसके लिए सबसे उपयुक्त वातारण प्रक्षेपी तकनीकों के माध्यम से तैयार हुआ, जिसका प्रयोग करके, यदि कोई व्यक्ति सामाजिक हिचकिचाहट के कारण कोई बात व्यक्त नहीं कर पाता है तो इस प्रक्षेपी वातावरण में व्यक्त कर सकता है। इसमें दो प्रमख परीक्षण रोसौ दवारा विकसित रोर्सा स्याही धब्बा परीक्षण और मैस्लो दवारा विकसित थीमैटिक एपरसेप्सन टेस्ट (टी0ए0टी0) मुख्य हैं। कुछ प्रक्षेपी परीक्षणों में वाक्यपूर्ति द्वारा भी अनुक्रिया प्राप्त की जाती है।

सार सन्दर्भ

इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यक्तित्व एक गत्यात्मक संरचना है जिसकी व्याख्या अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों ने अपने मत के अनुसार अलग-अलग तरीके से की है। इन्होंने व्यक्तित्व की अलग-अलग संरचनायें और व्यक्तित्व विकास अवस्थायें भी बतायी हैं। अच्छी प्रकार से पालन-पोषण नहीं होने पर कई विकृतियां भी उत्पन्न हो सकती हैं। व्यक्तित्व का मापन करने की कई विधियां भी बतायी गयी हैं।